शास्त्र जी की भक्ति

करूँ भक्ति तेरी हरो दुख माता भ्रमण का। टेक।।
अकेला ही हूँ मैं कर्म सब आये सिमटिके।
लिया है मैं तेरा शरण अब माता सटकि के।।
भ्रमावत है मोको-करम दुख देता जन्म का।
करूँ भक्तितेरी हरो दुख माता भ्रमण का।। करूँ...१।।
दुखी हुआ भारी, भ्रमत फिरता हूँ जगत में।
सहा जाता नाहीं अकल घबराई भ्रमण में।।
करूँ क्या मा मोरी चलत वश नांही मिटन का।। करूँ...२।।
सुनों माता मोरी अरज करता हूँ दरद में।
दुखी जानो मोकों डरप कर आया शरण में।।
कृपा ऐसी कीजें, दरद मिट जाये मरण का।। करूँ...३।।
पिलावे जो मोकूँ सुबुद्धि कर प्याला अमृत का।
मिटावे जो मेरा सरव दुख सारे फिरन का।।
पड़ूं पांवां तेरे, हरो दुख सारा फिकर का।। करूँ...४।।

सवैया

मिथ्यातम नासवे को, ज्ञान के प्रकाशवे को।
आपा परकासवे को, भानु सी बखानी है।।
छहों द्रव्य जानवे को, वसु विधि भानवे को।
स्वः पर पिछानवे को परम प्रमानी है।।
अनुभौ बतायवे को, जीव के जतायवे को।
काहू न सतायवे को, भव्य उर आनी है।।
जहाँ तहाँ तारवे को, पार के उतारवे को।
मुख विस्तारवे को, ऐसी जिनवाणी है।।५।।

दोहा

जिनवाणी की स्तुति करे, अल्प बुद्धि परमान।
'पन्नालाल' विनती करै, दे माता मोहि ज्ञान।।६।।
हे जिनवाणी भारती, तोहिं जपूँ दिन रैन।
जो तेरा शरणा गहै, सुख पावै दिन रैन।।७।।
जा बानी के ज्ञान तै, सूझे लोकालोक।
सो वाणी मस्तक चढ़ी, सदा देत हो धोक।।८।।